

Written by नवेद शक्तिह
Thursday, 14 June 2018 19:02

: 0000000000 00000 000000 00000 00 0000-0000 00000000 00 00000000 0000000000 00 00000
00 00 00000 00000 : 00000000-0000000 00000, 000000 00 0000000000 0000000 : 00 00000
00000 00000000 00000 00 00000000 0000 00000000 00000 00 00000000 0000000000000 :

00000 0000000

00000 : रोजा इफ्तार 0 क मजहबी अनुष्ठान होने के साथ सोशल कज़ भी है। ऐसे आयोजन वभिन्न धर्मों, जातियों और परिकों के 0 कप्लेटफ़ॉर्म पर लाते हैं। ऐसे कार्यक्रमों में गरीब-अमीर, आम और खास में कोई अंतर भी नहीं होता। नफ़रत की राजनीति में यदि रोजा इफ्तार, होली मलिन और बड़े मंगल पर भंडारा जैसे कार्यक्रमों के बहाने जनमानस के 0 क़त्ल कर 0 क़त्ता की मसाल से राजनीतिकस्वार्थ भी साधा जाये तो इस में कोई हर्ज नहीं। मजहबी प्लेटफ़ॉर्म किसी भी मौके पर इंसान से इंसान के मोहबूबत से मलिनने की मलिनसारी की इजाजत देता है।

राजनीतिक रोजा इफ्तार खास और आम, अमीर और गरीब, हिन्दू-मुसलमान, ब्राह्मण और यादव, शिया और सुन्नी, सांसद, वधायक और मामूली कार्यकर्ता के 0 कप्लेटफ़ॉर्म पर ले आता है तो यहां राजनीतिकस्वार्थ भी बुरा नहीं है। क्योंकि नफ़रत और समाज के तोड़ने की राजनीति से तो 0 क़त्ता क स्वार्थ बेहतर ही है।

लेकिन अखलिश जी आपका होटल ताज वाला हाइटेकरोजा इफ्तार मजहबी 0 तबार से भी गलत था। चुनदि सपा प्रभावशाली ओहदेदारों वाली इस इफ्तार पार्टी में आपकी पार्टी के हजारों गरीब कार्यकर्ताओं का दिल टूटा होगा। ये इस्लामी शरयित के भी खिलाफ है। फ़ाइव स्टार होटल के बजाय ये इफ्तार पार्टी सपा पार्टी दफ़्तर या किसी आम जगह आयोजति होता तो इसमें आम सैकड़ों - हजारों कार्यकर्ता और गरीब रोजदारों के बुला कर उन्हें इज्जत भी बख़्श सकते थे और इसी बहाने उन्हें आपके करीब आने का मौक़ा भी मिलता। रोजे और इफ्तार का आधार इस्लामी नजरिया भी यही कहता है। राजनीतिक परपिक्वता भी यही कहती है। समाजवाद के समता मूलकसिद्धांत भी यही कहते हैं।

दूसरी सब से अहम बात ये कि आपके राजनीतिक ग्लैमर में जो उलेमा/आपके खास मुसलमान और रोजदार आपकी इफ्तार पार्टी की दावत में आ गये उनका रोजा भी मक़ू (शरयित के खिलाफ) हो गया। क्योंकि शरयित के नजरिया से फ़ाइव स्टार होटल का मांसाहारी भोजन खाने की इजाजत नहीं है। क्योंकि इस होटलों का गोशत झटके का कहा जाता है। झटके का मतलब जानवर को इस्लामी मानकों से ना कटना।

ना खुदा ही मलिा ना वसिले सनम, ना इधर के रहे ना उधर के रहे।